# डॉ. परशुराम शुक्ल के बाल काव्य में प्रकृति चित्रण

**छाया श्रीवास्तव[1], डॉ. संगीता पाठक[2]**
[1]शोधार्थी, आईसेक्ट विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.) भारत
[2]डीन कला संकाय, आईसेक्ट विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.) भारत

**सारांश**
*वरिष्ठ साहित्यकार श्री परशुराम शुक्ल के आलेख, कहानियाँ व कविताएँ भारक की छोटी–बड़ी प्रतिष्ठित बाल पत्रिकाओं में समय–समय पर प्रकाशित होती रही हैं। ''बाल भारती' मधुमस्कान' लोट पोट नन्हें सम्राट, बालहंस, हसती दुनिया आदि बाल पत्रिकाओं में शुक्ल जी की 'मोघिया लोक कथाओं का शानदान स्वागत हुआ। सन् 1987 में उन्होंने बीस से अधिक रचनाएं तथा एक पुस्तक लिखी। उन्होंने बाल धारावाहिक बाल कहानियां, बाल एकांकी बाल कविताएं, शिशु गीत और बालोपयोगी आलेख सभी पर अधिकारपूर्वक लेखनी चलायी। उन्होंने कही प्राकृतिक सौदर्न्य पर तो कहीं नन्हें बच्चों को जगाने के कई मधुर गीत लिखे हैं। श्री शुल्क ने बच्चों के इस मनोविज्ञान को समझा है और उनकी जिज्ञासा शांत करने के लिये नई–नई बाल कविताएं लिखी है। श्री शुक्ल जी द्वारा लिखित ''हमारे प्राकृतिक प्रतीक'' हिन्दी बाल साहित्य की अपने विषय की पहली पुस्तक है। इस पुस्तक की विशेषता है कि इसमें पेड़ों की भी विस्तृत जानकारी दी हुई है। श्री शुक्ल ने अपनी बाल कविताओं में मौसम और उसकी उपयोगिता को बड़े सरल सहज तरीके से बताया। पशु पक्षियों से श्री शुक्ल का प्यार ही अलग है, उनकी ज्यादातर बाल कविताएं पशु पक्षियों पर केन्द्रित हैं। प्राकृतिक चित्रण का शायद ही कोई कोना ऐसा होगा जो शुक्ल जी की लेखनी से अछूता रहा हो।*

***मुख्यबिन्दुः***– बाल कविता, प्रकृति, मनोविज्ञान, शिक्षाप्रद, लोककथाएँ सृजन, जिज्ञासु, बाल–मनोभाव

## I प्रस्तावना

भारत की शायद ही कोई बाल पत्रिका हो जिसमें वरिष्ठ साहित्यकार श्री परशुराम शुक्ल की कविता कहानी आलेख आदि न प्रकाशित हुए हों। आपने मनोरंजक ज्ञानवर्धक एवं शिक्षाप्रद बाल साहित्य की रचना की। इसमें बालोपयोगी कविताएं कहानियां वैज्ञानिक आलेख तथा लोक कथाएँ प्रमुख थी। इस समय भी आप साहित्य सृजनरत हैं।

शुक्ल जी ने 1986 में पहली मोघिया लोककथा 'बड़ा कौन' लिखी। इसके पश्चात दूसरी मोघिया लोककथा 'करनी का फल', 'पराग' 1987 में प्रकाशित हुआ। इसके बाद तो सिलसिला चल पड़ा। शुक्लजी ने करीब पचास मोघिया लोककथाएं लिखो। उनकी सबसे पहली और महत्वपूर्ण सफलता यह थी कि उनकी प्रथम बाल रचना 'नंदन' जैसी पत्रिका में 'बड़ा कौन' शीर्षक से प्रकाशित हुई।

शुक्लजी की रचना 'चम्पो का बलिदान' पुरस्कृत हुई। सन् 1996 के बाद श्री शुक्त जी ने बाल साहित्य की विभिन्न विधाओं पर लिखना आरंभ किया। पर्यावरण एवं वन मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा आयोजित अखिल भारतीय पर्यावरण सुरक्षा प्रतियोगिता में आपकी बाल कविता 'वृक्षकथा' का प्रथम पुरस्कार मिला। बीसवीं सदी का विलक्षण अविष्कारः रोबोट और एक पुस्तक 'लेसर' पुरस्कृत हुए। 1992 में आपकी पुस्तक 'भारतीय वन्य जीव को प्रथम पुरस्कार मिला।

श्री शुक्ल का बाल साहित्य बड़ा विस्तृत और विधि पूर्ण है। उन्होंने बाल धारावाहिक बाल उपन्यास, बाल कहानियां, बाल एकांकी बाल कविताएं और शिशु गीत लिखकर बाल साहित्य की प्रचलित परम्परा का निर्वाह किया और बाल साहित्य की आधारशिला रखी है।

## II डॉ. परशुराम शुक्ल की रचनाओं में प्रकृति चित्रण की विवेचना

शुक्ल जी ने प्रभात का वर्णन, प्राकृतिक सौदर्न्य का अति मधुर चित्रण किया हैं। हमारे धार्मिक ग्रंथों में भी प्राकृतिक सौदर्न्य का चित्रण बड़े ही मनमोहक तरीके से किया है। श्री शुक्ल ने भी ऐसा ही एक प्रयास अपनी कविताओं में किया है।

भोर हुई सूरज ने लाली, चारों ओर बिछाई
रात गई सब फूल खिल गये, धरती मौ मुस्कई
शीतल मंद पवन के झोके, ले परवैया आई
पक्षी भी सब लगे चहकने, नभ पर आभा छाई। (1)

वर्तमान युग के बालक राजा, रानी भूत प्रेत, परियों जंगल का राजा, जलपरी आदि की कहानियों में रूचि नहीं रखते हैं। वह काल्पनिक रूप में नहीं रहना चाहता उसे वास्तविक रूप जो उसे मनोरंजन दे व साक्षात् हो वहीं भाता है। उसे कल्पनाओं को आधार बनाकर संतुष्ट नहीं किया जा सकता।

प्राकृतिक संरचनाएं हमेशा से बच्चों व मानव दोनों के लिए जिज्ञासा का केन्द्र रही है। ऐसे ही सागर के बारे में भी बच्चों के मन में जिज्ञासाएं उठती है। कई बार तो टी.वी. पर समुद्र जहाज चलते हुए बड़ी–बड़ी मछलियां ऊंची उठती लहरें उनकी जिज्ञासा को और बढ़ा देती है। श्री शुक्ल ने बालकों की इसी जिज्ञासु प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए अत्यन्त सरल भाषा में प्रकृति पर बाल कविता का सृजन किया हैं।

इस धरती पर बड़े गर्व से, लहर–लहर सागर लगराता।
तर से अगर इसे देखें तो, अपना विस्तृत रूप दिखाता।
दृष्टि जहां तक जाती अपनी, जल ही जल दिखाई देता।
ऊँची–ऊँची लहरों से यह, अपनी छवि विराट कर लेता। (2)

बड़े–बड़े पेड़ हों या छोटे–छोटे पौधे, सदा बच्चों को लुभाते हैं। उन पर लगने वाले फल फूल, कलियां आदि बालकों के मन का, आकर्षण को केन्द्र रहे हैं पेड़ों पर चढ़कर फलों को तोड़ना, फूलों को इकट्ठा करना बच्चों की रूचि में शामिल रहा हैं।

भारत के सभी प्राकृतिक प्रतीकों का परिचय ज्यादातर लोगों को रहता है। सामान्यतः भारत के राष्ट्रीय पशु, पक्षी, वृक्ष, राष्ट्रीय, पुष्प की जानकारी तो है। किन्तु भारत में राज्यों ने केन्द्र शासित ने भी अपने–अपने राज्य पशु, राज्य पक्षी, राज्य पुष्प घोषित किए है। इसी कड़ी में सन् 2009 में जनवाणी प्रकाशन, दिल्ली द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक की पूरे देश में चर्चा हुई।

भारत के समतल भागों में बरगद पाया जाता।
पाक और इराक आदि से इसका गहरा नाता।
दैत्याकार वृक्ष अति भारी, बड़ी अनोखी काया।
बारहमासी हरा–भरा यह देता शीतल छाया। (3)

श्री शुक्ल ने पर्यावरण में नदी पहाड़ों जंगलों में विशेष रूचि दिखाई है। शिशु गीतों और बाल कविताओं की उनकी सभी पुस्तकों में पर्यावरण और वन्यजीव किसी न किसी रूप में विद्यमान है। उन्होंने अपनी बाल कविताओं में नदी के जल पहाड़ों और जंगल की सुरक्षा, वन्यजीवों की सुरक्षा उनकी महत्ता का वर्णन कर उनकी उपयोगिता को दर्शाया है।

नदी निकलती है पर्वत से,
मैदानों में बहती है
और अंत में मिल सागर से
एक कहानी कहती है (4)

घने जंगल, पहाड़ों को भी कविताओं के माध्यम से श्री शुक्त ने चित्रित किया है। इसमें 'जंगल के रंग' बाल कविता के द्वारा बच्चों को जंगल की महत्ता बताई है।

जंगल के सब रंग निराले
पीले, लाल बसन्ती, काले
हरियाली वृक्षों पर छाई
हवा चले सुन्दर सुखदाई। (5)

इस पृथ्वी पर सभी मौसमों की उपयोगिता है।

घिरी घटाएँ काली–काली
हवा चल रही है मतवाली
बड़े जोर से बादल गरजे
आसमान में बिजली चमके। (6)

वर्षा की तरह गर्मी के मौसम का प्रभाव कैसा–कैसा इसको भी सराहा है।

गर्मी आई गर्मी आई।
भागे कम्बल और रजाई।
सूरज बना आग का गोला
उगल रहा शोले का शोला। (7)

वर्षा, गर्मी की तरह सर्दी के मौसम के असर से क्या वातावरण होता है इन पंक्तियों के द्वारा उसी मौसम का भान शुक्ल जीन की इस कविता से होता है–

किट–किट दांत बजाने वाली
आई सर्दी आई।
भाग गये सब पतले चादर
निकली लाल रजाई। (8)

उन्होंने बाल मनोभावों को बहुत नजदीक से पहचाना है।

इस संबंध में उनकी एक कविता है–

चींची करती चिड़िया रानी
मेरे घर आ जाती है।
दाना जिनका जो भी मिलता
बड़े प्रेम से खाती है। (9)

शेर लोमड़ी, भालू, बंदर
बल्ला लेकर आये।
और सभी ने मिलकर पूरे,
रन उन्नीस बनाए। (10)

प्रकृति में जो भी है उनकी कलम ने सभी को जीवन्त किया है। एक नया सौन्दर्य रूप दिया है। उनकी बाल कविताएं इतनी मर्म स्पर्शी है कि उन्हें पढ़ने पर बड़े भी बचपन में चले जाते है।

प्रकृति की हरियाली फल फूल की सुन्दरता वृक्ष की महिमा इत्यादि उनकी कविता में मिलती है।

तन मन को सुख देने वाले
वृक्ष हमेशा लहराते है।
बागों में कलिया खिलती है।
भँवरे उन पर मँडराते है। (11)

## संदर्भ सारणी

[1] परशुराम शुक्ल, पुरस्कृत बाल गीत भाग दो पृष्ठ 21

[2] परशुराम शुक्ल, आओ, गुनगुनाओ पृष्ठ 11

[3] परशुराम शुक्ल, ''हमारे प्राकृतिक प्रतीक'' जनवाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2009 पृष्ठ 20

[4] परशुराम शुक्ल, ''प्रतिनिधि बाल कविताएँ'' राम श्री प्रकाशन, 23 प्लेटिनम पार्क, भोपाल, 2015 पृष्ठ 45

[5] परशुराम शुक्ल, ''प्रतिनिधि बाल कविताएँ'' राम श्री प्रकाशन, 23 प्लेटिनम पार्क, भोपाल, 2015 पृष्ठ 33

[6] परशुराम शुक्ल, ''प्रतिनिधि बाल कविताएँ'' राम श्री प्रकाशन, 23 प्लेटिनम पार्क, भोपाल, 2015 पृष्ठ 23

[7] परशुराम शुक्ल, ''प्रतिनिधि बाल कविताएँ'' राम श्री प्रकाशन, 23 प्लेटिनम पार्क, भोपाल, 2015 पृष्ठ 23

[8] परशुराम शुक्ल, "प्रतिनिधि बाल कविताएँ" राम श्री प्रकाशन, 23 प्लेटिनम पार्क, भोपाल, 2015 पृष्ठ 43

[9] परशुराम शुक्ल, "प्रतिनिधि बाल कविताएँ" राम श्री प्रकाशन, 23 प्लेटिनम पार्क, भोपाल, 2015 पृष्ठ 18

[10] परशुराम शुक्ल, "प्रतिनिधि बाल कविताएँ" राम श्री प्रकाशन, 23 प्लेटिनम पार्क, भोपाल, 2015 पृष्ठ 19

[11] परशुराम शुक्ल, "प्रतिनिधि बाल कविताएँ" राम श्री प्रकाशन, 23 प्लेटिनम पार्क, भोपाल, 2015 पृष्ठ 11